॥ ॐ श्रीपरमात्मने नमः ॥

सन्तवाणी

[प्रथम शतक]

परमश्रद्धेय स्वामीजी श्रीरामसुखदासजी महाराजके

अनमोल वचन

॥ ॐ श्रीपरमात्मने नमः ॥

हे नाथ!

मैं आपको भूलूँ नहीं

॥ ॐ श्रीपरमात्मने नमः ॥

पंचामृत

(परमश्रद्धेय स्वामीजी श्रीरामसुखदासजी महाराज)

१. हम भगवान्‌के ही हैं।

२. हम जहाँ भी रहते हैं, भगवान्‌के ही दरबारमें रहते हैं।

३. हम जो भी शुभ काम करते हैं, भगवान्‌का ही काम करते हैं।

४. शुद्ध-सात्त्विक जो भी पाते हैं, भगवान्‌का ही प्रसाद पाते हैं।

५. भगवान्‌के दिये प्रसादसे भगवान्‌के ही जनोंकी सेवा करते हैं।

॥ ॐ श्रीपरमात्मने नमः ॥

यदि वस्तुओंकी इच्छा न रहे तो जीवन आनन्दमय हो जाता है और यदि जीनेकी इच्छा न रहे तो मृत्यु भी आनन्दमयी हो जाती है। जीवन तभी कष्टमय होता है, जब वस्तुओंकी इच्छा करते हैं और मृत्यु तभी कष्टमयी होती है, जब जीनेकी इच्छा करते हैं।

—परमश्रद्धेय स्वामीजी श्रीरामसुखदासजी महाराज

॥ ॐ श्रीपरमात्मने नमः ॥



हमारी सत्ता (होनापन) शरीरके अधीन नहीं है। शरीरके बढ़ने-घटने, कमजोर-बलवान् होनेपर, बालक-बूढ़ा होनेपर अथवा रहने-न रहनेपर हमारी सत्तामें कोई फर्क नहीं पड़ता।

जन्मना और मरना हमारा धर्म नहीं है, प्रत्युत शरीरका धर्म है। हमारी आयु अनादि और अनन्त है, जिसके अन्तर्गत अनेक शरीर उत्पन्न होते और मरते रहते हैं।

—परमश्रद्धेय स्वामीजी श्रीरामसुखदासजी महाराज

॥ ॐ श्रीपरमात्मने नमः ॥

सृष्टिकी प्रत्येक वस्तु, व्यक्ति आदि प्रतिक्षण नाशकी ओर जा रहे हैं। हम जिस वस्तु, व्यक्ति आदिमें सुन्दरता, बलवत्ता आदि विशेषता देखते हैं, वे एक दिन नष्ट हो जाते हैं। अतः सृष्टिकी प्रत्येक वस्तु मानो यह क्रियात्मक उपदेश दे रही है कि मेरी तरफ मत देखो, मैं तो रहूँगी नहीं, मेरेको बनानेवालेकी तरफ देखो। मेरेमें जो सुन्दरता, सामर्थ्य, विलक्षणता आदि दीख रही है, यह मेरी नहीं है, प्रत्युत उसकी है!

—परमश्रद्धेय स्वामीजी श्रीरामसुखदासजी महाराज

॥ ॐ श्रीपरमात्मने नमः ॥

हमारा सम्बन्ध शरीर-संसारके साथ है ही नहीं—यह बात मान लें तो इससे बड़ा कोई काम है ही नहीं। हजारों-लाखों आदमियोंको भोजन करायें तो वह भी इसके बराबर नहीं हो सकता।



—परमश्रद्धेय स्वामीजी श्रीरामसुखदासजी महाराज



॥ ॐ श्रीपरमात्मने नमः ॥

शरीर-निर्वाहके लिये तो चिन्ता करनेकी जरूरत ही नहीं है, पर शरीर छूटनेके बाद क्या होगा—इसके लिये चिन्ता करनेकी बहुत जरूरत है।

—परमश्रद्धेय स्वामीजी श्रीरामसुखदासजी महाराज





॥ ॐ श्रीपरमात्मने नमः ॥

हम यहाँके, जन्म-मृत्युवाले संसारके नहीं हैं। यह हमारा देश नहीं है। हम इस देशके नहीं हैं। यहाँकी वस्तुएँ हमारी नहीं हैं। हम इन वस्तुओंके नहीं हैं। हमारे ये कुटुम्बी नहीं हैं। हम इन कुटुम्बियोंके नहीं हैं। हम तो केवल भगवान्‌के हैं और भगवान् ही हमारे हैं।



—परमश्रद्धेय स्वामीजी श्रीरामसुखदासजी महाराज

॥ ॐ श्रीपरमात्मने नमः ॥

मृत्युकालकी सब सामग्री तैयार है। कफन भी तैयार है, नया नहीं बनाना पड़ेगा। उठानेवाले आदमी भी तैयार हैं, नये नहीं जन्मेंगे। जलानेकी जगह भी तैयार है, नयी नहीं लेनी पड़ेगी। जलानेके लिये लकड़ी भी तैयार है, नये वृक्ष नहीं लगाने पड़ेंगे। केवल श्वास बन्द होनेकी देर है। श्वास बन्द होते ही यह सब सामग्री जुट जायगी। फिर निश्चिन्त कैसे बैठे हो?



—परमश्रद्धेय स्वामीजी श्रीरामसुखदासजी महाराज

॥ ॐ श्रीपरमात्मने नमः ॥

'हे नाथ! मैं आपको भूलूँ नहीं'—यह एक मन्त्र है, जिसे सब भाई-बहन याद कर लो और बार-बार कहते रहो। सुबह उठकर, स्नान करके, नित्य-नियम करके, दिनमें, शाममें, रात्रि सोते समय—इस प्रकार दिनमें पाँच-सात बार नियमसे 'हे नाथ! मैं आपको भूलूँ नहीं'—ऐसा कहते रहो तो आप देखो कि आपके जीवनमें फर्क पड़ता है कि नहीं पड़ता! भगवान्‌की स्मृति रहनेसे सम्पूर्ण विपत्तियोंका नाश हो जायगा—'हरिस्मृतिः सर्वविपद्विमोक्षणम्' (श्रीमद्भा० ८।१०।५५)। आपका अन्तःकरण शुद्ध, निर्मल हो जायगा। भगवान्‌के साथ आपका सम्बन्ध जुड़ जायगा।

—परमश्रद्धेय स्वामीजी श्रीरामसुखदासजी महाराज (१७.१.२००१, सायं ३, नागपुर)

॥ ॐ श्रीपरमात्मने नमः ॥

बालक जन्मता है तो वह बड़ा होगा कि नहीं, पढ़ेगा कि नहीं, उसका विवाह होगा कि नहीं, उसके बाल-बच्चे होंगे कि नहीं, उसके पास धन होगा कि नहीं आदि सब बातोंमें सन्देह है, पर वह मरेगा कि नहीं—इसमें कोई सन्देह नहीं है!

‘करेंगे’—यह निश्चित नहीं है,
पर ‘मरेंगे’—यह निश्चित है।



—परमश्रद्धेय स्वामीजी श्रीरामसुखदासजी महाराज

॥ ॐ श्रीपरमात्मने नमः ॥

आपने साधन करते इतने वर्ष बिता दिये, अब मेरे कहनेसे दो-तीन दिन यह करके देख लो कि 'मेरा कुछ नहीं है, मेरेको कुछ नहीं चाहिये'।

जो लाभ वर्षोंसे नहीं हुआ, वह केवल इस बातको माननेसे हो जायगा कि 'मेरा कुछ नहीं है, मेरेको कुछ नहीं चाहिये'। इस बातको माननेसे लाभ ही होगा, नुकसान किंचिन्मात्र भी नहीं होगा।

जो चीज दीखे, 'यह मेरी नहीं है'; क्योंकि कोई भी चीज आपके साथ रहनेवाली नहीं है।



—परमश्रद्धेय स्वामीजी श्रीरामसुखदासजी महाराज

॥ ॐ श्रीपरमात्मने नमः ॥



अगर आप सुगमतासे भगवत्प्राप्ति चाहते हैं तो मेरी प्रार्थना है कि आप 'मैं भगवान्‌का हूँ'—यह मान लें। यह 'चुप साधन' अथवा 'मूक सत्संग' से भी बढ़िया साधन है!

—परमश्रद्धेय स्वामीजी श्रीरामसुखदासजी महाराज

॥ ॐ श्रीपरमात्मने नमः ॥

जब आपका एक उद्देश्य बन जायगा कि ‘मैं भगवान्‌का हूँ और भगवान्‌की तरफ चलूँगा’ तो यमराज आपसे डरेगा! बड़े-बड़े दोष आपसे डरेंगे!

—परमश्रद्धेय स्वामीजी श्रीरामसुखदासजी महाराज



॥ ॐ श्रीपरमात्मने नमः ॥

जो भगवान्‌की कथा सुनाते हैं, भगवान्‌की लीलाका वर्णन करते हैं, भगवान्‌की चर्चा करते हैं, वे अनुभवी न हों तो भी लाभ होता है। परन्तु उनको तात्त्विक, उपदेशकी बातें कहनेका अधिकार नहीं है। इसका अधिकार उनको है, जिन्होंने अनुभव करके देखा है।

—परमश्रद्धेय स्वामीजी श्रीरामसुखदासजी महाराज

(३१.१०.२०००, सायं ३.३०, वृन्दावन)



॥ ॐ श्रीपरमात्मने नमः ॥

सब-के-सब भाई-बहन तीन बातोंका खूब मनन करें—१) हम अपने साथ कुछ लाये नहीं थे, २) हम अपने साथ कुछ नहीं ले जा सकेंगे, और ३) जो चीज मिलती है और बिछुड़ जाती है, वह अपनी नहीं होती। अगर आप कल्याण चाहते हो तो चलते-फिरते, उठते-बैठते इन तीन बातोंका मनन करो। इससे बहुत लाभ होगा।

परमश्रद्धेय स्वामीजी श्रीरामसुखदासजी महाराज

॥ ॐ श्रीपरमात्मने नमः ॥

वास्तवमें भगवान् हमारे भीतर हैं। उनको बार-बार 'हे मेरे नाथ! हे मेरे प्रभो!' पुकारो और समझो कि भगवान् मेरे भीतर हैं; उनसे मैं कह रहा हूँ और वे सुन रहे हैं, मुझे देख रहे हैं। एक जन्मकी माँ भी पुकारनेसे आ जाती है, फिर भगवान् तो सदाकी माँ हैं! वे जरूर आयेंगे!

—परमश्रद्धेय स्वामीजी श्रीरामसुखदासजी महाराज

॥ ॐ श्रीपरमात्मने नमः ॥

समस्त साधनोंका सार

१. परमात्मा यहाँ हैं
२. परमात्मा अभी हैं
३. परमात्मा अपनेमें हैं
४. परमात्मा अपने हैं

परमात्मा सब जगह होनेसे यहाँ भी हैं; सब समय होनेसे अभी भी हैं; सबमें होनेसे अपनेमें भी हैं; और सबके होनेसे अपने भी हैं।

परमश्रद्धेय स्वामीजी श्रीरामसुखदासजी महाराज

॥ ॐ श्रीपरमात्मने नमः ॥

अपने ज्ञानको दूसरेपर मत थोपो, खुद उसपर विचार करो। दूसरा माने तो अच्छी बात, न माने तो अच्छी बात। आप अपने ही गुरु, नेता और शासक बन जाओ—'उद्धरेदात्मनात्मानम्' (गीता ६।५) 'अपने द्वारा अपना उद्धार करो।' आप अपना सुधार कर लो तो दुनियामात्रकी सेवाका, उपकारका पुण्य आपको हो जायगा।

—परमश्रद्धेय स्वामीजी श्रीरामसुखदासजी महाराज

॥ ॐ श्रीपरमात्मने नमः ॥

'हे मेरे नाथ! मैं आपको भूलूँ नहीं'—यह प्रार्थना हरेक भाई-बहनके लिये बड़े कामकी है। आप हरदम यह प्रार्थना करके देखो तो सही, विचित्रता आ जायगी!

भगवान्‌को भूलें नहीं, फिर सब काम ठीक हो जायगा। स्वयं पहलेसे ही परमात्माका अंश है और वह उसीके शरण हो जाय तो फिर बाकी क्या रहेगा?

परमश्रद्धेय स्वामीजी श्रीरामसुखदासजी महाराज

॥ ॐ श्रीपरमात्मने नमः ॥

मैं मनुष्यमात्रको परमात्मप्राप्तिका अधिकारी मानता हूँ। जो अनपढ़ है, एक अक्षर भी नहीं जानता, उसको भी तत्त्वज्ञान हो सकता है, परमात्मप्राप्ति हो सकती है। कारण कि स्वरूपसे सब परमात्माके अंश हैं। जड़की तरफ अर्थात् भोग और संग्रहकी तरफ आकर्षण होनेके कारण ही चिन्मय स्वरूपका अनुभव नहीं हो रहा है।

—परमश्रद्धेय स्वामीजी श्रीरामसुखदासजी महाराज



॥ ॐ श्रीपरमात्मने नमः ॥



जहाँ प्रेम होता है, वहाँ कामना नहीं होती। जहाँ कामना होती है, वहाँ प्रेम नहीं होता। जो आपसे कुछ भी लेना चाहता है, वह आपसे प्रेम नहीं कर सकता, और सेवा भी नहीं कर सकता।

—परमश्रद्धेय स्वामीजी श्रीरामसुखदासजी महाराज

॥ ॐ श्रीपरमात्मने नमः ॥

जरा सोचें, संसारमें भगवान्‌को मानने की जरूरत ही क्यों पड़ी? जरूरत इसलिये पड़ी कि संसारमें अपने साथ सदा रहनेवाला कोई मित्र है ही नहीं! क्या शरीर, कुटुम्ब, रुपये, जमीन-जायदाद आदि सदा साथमें रहेंगे? सोच लो। भगवान्‌के सिवाय हरदम साथ रहनेवाला कोई दूसरा है ही नहीं। वे तो प्राणिमात्रके हृदयमें रहते हैं। विचार करें, गहरी नींदमें आपके साथ कौन रहता है? कोई साथमें नहीं रहता, पर भगवान् साथमें रहते हैं।

—परमश्रद्धेय स्वामीजी श्रीरामसुखदासजी महाराज
'नये रास्ते, नयी दिशाएँ' पुस्तकसे

॥ ॐ श्रीपरमात्मने नमः ॥

एक ऐसी बढ़िया बात है कि आप आज मान लो तो आज ही काम पूरा है! जिन-जिनको आप अपना मानते हो, वे व्यक्ति अथवा पदार्थ अपने कबसे हैं और कबतक रहेंगे? इस बातपर सब भाई-बहन विचार करें। क्या वे सदासे साथमें थे? क्या वे सदा साथमें रहेंगे? उनमें अपनापन केवल नाटकमें स्वाँगकी तरह व्यवहार करनेके लिये है। आप लखपति हैं तो कितने दिनसे हैं और कितने दिनतक रहेंगे? आज मर जाओ तो एक कौड़ी भी साथमें है? केवल वहम पड़ा है कि मैं लखपति हूँ। दो आँखें मिच गयीं तो फिर कुछ भी अपना नहीं रहेगा।

—परमश्रद्धेय स्वामीजी श्रीरामसुखदासजी महाराज

॥ ॐ श्रीपरमात्मने नमः ॥

हमारे मनमें यह बात आती है कि सब भाई-बहन, चाहे वे किसी भी वर्ण, आश्रम आदिके हों, 'हे नाथ! हे प्राणनाथ! हे परमेश्वर! हे मेरे स्वामी!' पुकारो। पुकार सबसे बड़ा, उत्तम साधन है। इसमें इतना बल है कि भगवान्‌को भी खींच ले!

—परमश्रद्धेय स्वामीजी श्रीरामसुखदासजी महाराज

॥ ॐ श्रीपरमात्मने नमः ॥

Whatever appears will certainly disappear.

अभी आप जिसे देख रहे हैं, वह एक दिन नहीं रहेगा!

परमश्रद्धेय स्वामीजी श्रीरामसुखदासजी महाराज

विचार करें! आप अपने कुटुम्बके लोगोंसे एवं अन्य प्राणियोंसे सुख चाहते हैं, तो क्या वे सभी सुखी हैं? क्या कभी दुःखी नहीं होते? क्या वे सभी सबके अनुकूल होते भी हैं? क्या वे सभी आपके साथ रहते भी हैं? क्या रहना चाहते भी हैं? क्या वे सभी आपके साथ रह भी सकते हैं? क्या पहलेवाले साथी सभी आपके साथ हैं? क्या उनके मनोंमें और शरीरोंमें परिवर्तन नहीं होता? क्या उनमेंसे किसीके मनमें किसी प्रकारकी कमीका बोध नहीं होता? क्या वे सर्वदा सर्वथा पूर्ण हैं? क्या वे कभी किसीसे कुछ भी नहीं चाहते हैं? कम-से-कम आपसे तो कुछ नहीं चाहते होंगे? सोचिये! जो दूसरोंसे अपने लिये कुछ भी चाहता है, क्या वह दूसरोंकी चाह पूरी कर सकता है? क्या स्वयं सुख चाहनेवाला औरोंको सुख दे सकता है?

॥ ॐ श्रीपरमात्मने नमः ॥

वर्तमान समयमें घरोंमें, समाजमें जो अशान्ति, कलह, संघर्ष देखनेमें आ रहा है, उसमें मूल कारण यही है कि लोग अपने अधिकारकी माँग तो करते हैं, पर अपने कर्तव्यका पालन नहीं करते।

* * * * * * * * *

'तू कर, तू कर' कहनेसे काम-धंधा ज्यादा हो जायगा और आदमी कम हो जायँगे, जिससे नौकर रखना पड़ेगा। पर 'मैं करूँ, मैं करूँ' कहनेसे काम-धंधा कम हो जायगा और आदमी ज्यादा हो जायँगे। 'तू कर, तू कर' कहनेसे लड़ाई हो जायगी और 'मैं करूँ, मैं करूँ' कहनेसे लड़ाई मिट जायगी।

—परमश्रद्धेय स्वामीजी श्रीरामसुखदासजी महाराज



॥ ॐ श्रीपरमात्मने नमः ॥

कोई भी काम करें तो भगवान्‌को याद करके करें। कहीं भी जाना हो तो भगवान्‌का नाम लेकर, चार बार 'नारायण' नामका उच्चारण करके घरसे निकलें। कुछ भी लिखें तो पहले ऊपर भगवान्‌का नाम लिखें। जिस पत्रके ऊपर भगवान्‌का नाम नहीं लिखा हो, वह बिना सिरवाले पिशाचकी तरह है!

—परमश्रद्धेय स्वामीजी श्रीरामसुखदासजी महाराज

॥ ॐ श्रीपरमात्मने नमः ॥

हम भगवान्‌के अंश हैं। इसलिये भगवान्‌का
जो धाम है, वही हमारा धाम है।
यह सम्पूर्ण संसार (मात्र ब्रह्माण्ड) परदेश है,
स्वदेश नहीं। यह पराया घर है, अपना घर नहीं।
विभिन्न योनियोंमें और लोकोंमें हमारा घूमना,
भटकना तभी बन्द होगा, जब हम अपने
असली घर पहुँच जायँगे।

—परमश्रद्धेय स्वामीजी श्रीरामसुखदासजी महाराज

॥ ॐ श्रीपरमात्मने नमः ॥

एक ध्यान देनेकी बात है कि आप भगवान्‌में मनको तो लगाना चाहते हैं, पर अपनेको लगाना नहीं चाहते! यह खास समझनेकी बात है कि आप अपने-आपको लगाना चाहो तो मन लग जायगा, पर मन लगाओ तो नहीं लगेगा। आप तो लगते नहीं और मन लगाना चाहते हैं तो कैसे लगेगा? विवाह होनेपर लड़की आप (खुद) ससुरालकी हो जाती है, मन नहीं लगाती। इसलिये बड़ी सुगमतासे काम हो जाता है। जैसे वह अपने-आपको लगाती है कि 'मैं पीहरकी नहीं हूँ, ससुरालकी हूँ', ऐसे ही आप अपने-आपको भगवान्‌में लगाओ कि 'मैं भगवान्‌का हूँ'।

—परमश्रद्धेय स्वामीजी श्रीरामसुखदासजी महाराज



॥ ॐ श्रीपरमात्मने नमः ॥

‘वासुदेवः सर्वम्’

‘सब कुछ परमात्मा ही हैं’

—यह खुले नेत्रोंका ध्यान है। इसमें न आँख बन्द करने (ध्यान)-की जरूरत है, न कान बन्द करने (नादानुसन्धान)-की जरूरत है, न नाक बन्द करने (प्राणायाम)-की जरूरत है!

परमश्रद्धेय स्वामीजी श्रीरामसुखदासजी महाराज

॥ ॐ श्रीपरमात्मने नमः ॥

परमात्मासे नजदीक कोई चीज है ही नहीं! परमात्मा जितने नजदीक हैं, उतना नजदीक आपका शरीर भी नहीं है, प्राण भी नहीं हैं, मन-बुद्धि भी नहीं हैं! जो परमात्मा कभी मिलेंगे, वे अब भी मिले हुए ही हैं। जो कभी आपसे अलग होगा, वह अब भी अलग ही है।

—परमश्रद्धेय स्वामीजी श्रीरामसुखदासजी महाराज



॥ ॐ श्रीपरमात्मने नमः ॥

किसी भी मार्गका साधक क्यों न हो, उसे इस सत्यको स्वीकार करना ही पड़ेगा कि शरीर मैं नहीं हूँ, शरीर मेरा नहीं है और शरीर मेरे लिये नहीं है।

जबतक साधकमें यह भाव रहेगा कि मैं शरीर हूँ और शरीर मेरा तथा मेरे लिये है, तबतक वह कितना ही उपदेश पढ़ता-सुनता रहे और दूसरोंको सुनाता रहे, उसको शान्ति नहीं मिलेगी और कल्याण भी नहीं होगा।

—परमश्रद्धेय स्वामीजी श्रीरामसुखदासजी महाराज

॥ ॐ श्रीपरमात्मने नमः ॥

जैसे, दूसरा व्यक्ति भोजन तो दे देगा, पर भूख खुदकी चाहिये। खुदकी भूख न हो तो दूसरेके द्वारा दिया गया बढ़िया भोजन भी किस कामका? ऐसे ही खुदकी लगन न हो तो गुरुका, सन्त-महात्माओंका उपदेश किस कामका?

—परमश्रद्धेय स्वामीजी श्रीरामसुखदासजी महाराज



॥ ॐ श्रीपरमात्मने नमः ॥

सबसे कीमती धन है—समय। समय लगानेसे धन मिल सकता है, पर धन लगानेसे समय नहीं मिलता। अगर धनके बदले समय मिलता तो धनी आदमी नहीं मरते; क्योंकि पैसे देकर वे अपनी उम्र और बढ़ा लेते। परन्तु साठ वर्षोंमें जो धन कमाया है, उसके बदले साठ मिनट भी समय नहीं मिलता। ऐसे अमूल्य समयको भगवान्‌के भजनमें और संसारकी सेवामें लगाना चाहिये, नहीं तो समय सब चला जायगा और मिलेगा कुछ नहीं!

—परमश्रद्धेय स्वामीजी श्रीरामसुखदासजी महाराज

'सीमाके भीतर असीम प्रकाश' पुस्तकसे

॥ ॐ श्रीपरमात्मने नमः ॥

केवल यह मान लें कि परमात्मा सब जगह हैं। यह मानना जितना जोरदार होगा, उतने ही काम-क्रोधादि दोष कम हो जायँगे और फिर नष्ट हो जायँगे। अन्तमें यह मानना नहीं रहेगा, परमात्मा दीखने लग जायँगे।

—परमश्रद्धेय स्वामीजी श्रीरामसुखदासजी महाराज
'सीमाके भीतर असीम प्रकाश' पुस्तकसे

॥ ॐ श्रीपरमात्मने नमः ॥

सभी मनुष्य चाहते हैं कि हम सदाके लिये सुखी हो जायँ और दुःख सदाके लिये मिट जाय। परन्तु इस चाहकी पूर्ति भगवान्‌के भजनके बिना नहीं होगी, नहीं होगी, नहीं होगी! त्रिलोकीका राज्य, इन्द्रका पद अथवा ब्रह्माका पद भी मिल जाय तो भी इस चाहकी पूर्ति नहीं होगी।

—परमश्रद्धेय स्वामीजी श्रीरामसुखदासजी महाराज
'सीमाके भीतर असीम प्रकाश' पुस्तकसे

॥ ॐ श्रीपरमात्मने नमः ॥

‘कृष्णं वन्दे जगद्गुरुम्’

भगवान् जगत्‌के गुरु हैं और हम भी जगत्‌के भीतर ही हैं। इसलिये वास्तवमें हम गुरुसे रहित नहीं हैं। हम असली महान् गुरुके शिष्य हैं। गुरुका मन्त्र है—‘गीता’। इसलिये भगवान्‌को गुरु मानें और उनकी गीताको पढ़ें, उसके अनुसार अपना जीवन बनायें तो हमारा निश्चित-रूपसे कल्याण हो जायगा।

भगवान्‌के साथ हमारा स्वतन्त्र सम्बन्ध है। उसमें किसी दलालकी जरूरत नहीं है।

—परमश्रद्धेय स्वामीजी श्रीरामसुखदासजी महाराज

॥ ॐ श्रीपरमात्मने नमः ॥

भगवान्‌के विषयमें बहुत-सी बातें आती हैं। परन्तु जो अपना कल्याण चाहता है, उसको 'भगवान् कैसे हैं, कैसे नहीं हैं'—इन बातोंमें नहीं पड़ना चाहिये। कल्याण करनेवाली बात यह है कि 'भगवान् हैं और वे जैसे भी हैं, हमारे हैं'।

—परमश्रद्धेय स्वामीजी श्रीरामसुखदासजी महाराज

॥ ॐ श्रीपरमात्मने नमः ॥

दुःख भोगनेवाला तो भविष्यमें सुखी हो सकता है, पर दुःख देनेवाला कभी सुखी नहीं हो सकता।

परमश्रद्धेय स्वामीजी श्रीरामसुखदासजी महाराज

॥ ॐ श्रीपरमात्मने नमः ॥

लखपतिके मरनेपर एक कौड़ी भी साथ नहीं जायगी, जबकि भगवन्नामका जप करनेवालेके मरनेपर पूरा-का-पूरा भगवन्नाम-रूप धन उसके साथ जायगा, एक भी भगवन्नाम पीछे नहीं रहेगा।

परमश्रद्धेय स्वामीजी श्रीरामसुखदासजी महाराज

॥ ॐ श्रीपरमात्मने नमः ॥



मनुष्यको यह वहम रहता है कि अमुक वस्तुकी प्राप्ति होनेपर, अमुक व्यक्तिके मिलनेपर तथा अमुक क्रियाको करनेपर मैं स्वाधीन (मुक्त) हो जाऊँगा। परन्तु ऐसी कोई वस्तु, व्यक्ति और क्रिया है ही नहीं, जिससे मनुष्य स्वाधीन हो जाय। प्रकृतिजन्य वस्तु, व्यक्ति और क्रिया तो मनुष्यको पराधीन बनानेवाली हैं। उनसे सर्वथा असंग होनेपर ही मनुष्य स्वाधीन हो सकता है।

—परमश्रद्धेय स्वामीजी श्रीरामसुखदासजी महाराज

॥ ॐ श्रीपरमात्मने नमः ॥

संसारमें लाखों-करोड़ों घर हैं, अरबों आदमी हैं, अनगिनत रुपये हैं, पर उनकी चिन्ता नहीं होती; क्योंकि उनको वह अपना नहीं मानता। जिनको अपना नहीं मानता, उनसे तो मुक्त है ही। अतः ज्यादा मुक्ति तो हो चुकी है, थोड़ी-सी ही मुक्ति बाकी है!

परमश्रद्धेय स्वामीजी श्रीरामसुखदासजी महाराज

॥ ॐ श्रीपरमात्मने नमः ॥

भलाई करनेसे केवल समाजका हित होता है; परन्तु बुराईरहित होनेसे विश्वमात्रका हित होता है। वास्तवमें बुराईका त्याग होनेपर विश्वमात्रकी भलाई अपने-आप होती है, करनी नहीं पड़ती। इसलिये बुराईरहित महापुरुष अगर हिमालयकी एकान्त गुफामें भी बैठा हो, तो भी उसके द्वारा विश्वका बहुत हित होता है।

—परमश्रद्धेय स्वामीजी श्रीरामसुखदासजी महाराज

॥ ॐ श्रीपरमात्मने नमः ॥

बाहरका त्याग वास्तवमें त्याग नहीं है, प्रत्युत भीतरका त्याग ही त्याग है। अगर कोई बाहरसे त्याग करके एकान्तमें चला जाय तो भी संसारका बीज शरीर तो उसके साथ है ही। मरनेवालेका अपने शरीरसहित सब वस्तुओंका त्याग हो जाता है, पर उससे मुक्ति नहीं होती।



—परमश्रद्धेय स्वामीजी श्रीरामसुखदासजी महाराज

॥ ॐ श्रीपरमात्मने नमः ॥

किसी वस्तुकी इच्छाको लेकर भगवान्‌की भक्ति करनेवाला मनुष्य वस्तुतः उस इच्छित वस्तुका ही भक्त होता है; क्योंकि (वस्तुकी ओर लक्ष्य रहनेसे) वह वस्तुके लिये ही भगवान्‌की भक्ति करता है, न कि भगवान्‌के लिये।

—परमश्रद्धेय स्वामीजी श्रीरामसुखदासजी महाराज

॥ ॐ श्रीपरमात्मने नमः ॥

उद्धारके लिये मुझे सबसे बढ़िया यह बात मालूम दी कि 'हम भगवान्‌के हैं'। हम भगवान्‌के हैं—ऐसा मान लो तो इसको मैं सबसे बढ़िया भिक्षा मानता हूँ। आप उम्रभर मुझे भिक्षा दो तो उसमें इतना फायदा नहीं है, जितना इस एक बातको माननेमें है कि 'मैं भगवान्‌का हूँ'।

—परमश्रद्धेय स्वामीजी श्रीरामसुखदासजी महाराज
'सीमाके भीतर असीम प्रकाश' पुस्तकसे

॥ ॐ श्रीपरमात्मने नमः ॥

अनन्त ब्रह्माण्डोंमें केशभर भी कोई वस्तु अपनी नहीं है, पर अनन्त ब्रह्माण्ड जिसके एक अंशमें हैं, वे परमात्मा अपने हैं।

—परमश्रद्धेय स्वामीजी श्रीरामसुखदासजी महाराज

'सीमाके भीतर असीम प्रकाश' पुस्तकसे



अनन्त ब्रह्माण्डोंकी रक्षा करनेवाले परमात्मा हमारे पिता हैं, फिर हमें किस बातकी चिन्ता है ? अगर आप स्वीकार कर लो कि 'भगवान् हमारे हैं, हम भगवान्‌के हैं' तो आपमें एक दिनमें बड़ा भारी फर्क पड़ जायगा! आप निश्चिन्त, निर्भय हो जायँगे! भगवान्‌को अपना मान लो तो सब काम पूरा हो जायगा, कोई काम किंचिन्मात्र भी बाकी नहीं रहेगा।

—परमश्रद्धेय स्वामीजी श्रीरामसुखदासजी महाराज

'सीमाके भीतर असीम प्रकाश' पुस्तकसे

॥ ॐ श्रीपरमात्मने नमः ॥

'हे प्रभो, मैं आपका हूँ'—इस प्रकार आप भगवान्‌के चरणोंके आश्रित हो जायँ तो सब काम भगवान् करेंगे, भजन भी आपको नहीं करना पड़ेगा। 'हे नाथ! मैं आपको भूलूँ नहीं'—इस प्रार्थनामें बड़ा भारी बल है। निरन्तर नामजप करो और थोड़ी-थोड़ी देरमें यह प्रार्थना करते रहो। निहाल हो जाओगे! भगवान्‌को भूलूँ नहीं—यह काम हमारा है और सब काम भगवान्‌का है! आपको कुछ काम करना नहीं पड़ेगा।

—परमश्रद्धेय स्वामीजी श्रीरामसुखदासजी महाराज

'सीमाके भीतर असीम प्रकाश' पुस्तकसे



॥ ॐ श्रीपरमात्मने नमः ॥

हमारा कल्याण हमारी इच्छासे होगा, नहीं तो हजारों-लाखों गुरु हो गये, पर अभीतक हमारी मुक्ति क्यों नहीं हुई ?

—परमश्रद्धेय स्वामीजी श्रीरामसुखदासजी महाराज

'उद्धरेदात्मनात्मानम्'

(गीता ६ । ५)

'अपने द्वारा अपना कल्याण करे'

॥ ॐ श्रीपरमात्मने नमः ॥



जबतक आपके भीतर भोग और संग्रहकी इच्छा है, तबतक भले ही संसारमें आपकी महिमा, प्रशंसा, प्रसिद्धि, वाह-वाह हो जाय, जलूस निकाला जाय, मरनेके बाद आपका मन्दिर बनाया जाय, पर मुक्ति नहीं होगी।

—परमश्रद्धेय स्वामीजी श्रीरामसुखदासजी महाराज

'सीमाके भीतर असीम प्रकाश' पुस्तकसे

॥ ॐ श्रीपरमात्मने नमः ॥

छोटा बालक माँ-माँ करता है तो उसका लक्ष्य, ध्यान, विश्वास 'माँ' शब्दपर नहीं होता, प्रत्युत माँके सम्बन्धपर होता है। ताकत 'माँ' शब्दमें नहीं है, प्रत्युत माँके सम्बन्धमें है। इसी तरह जो ताकत भगवान्‌के सम्बन्धमें है, वह नाममें नहीं है।

—परमश्रद्धेय स्वामीजी श्रीरामसुखदासजी महाराज

'सीमाके भीतर असीम प्रकाश' पुस्तकसे

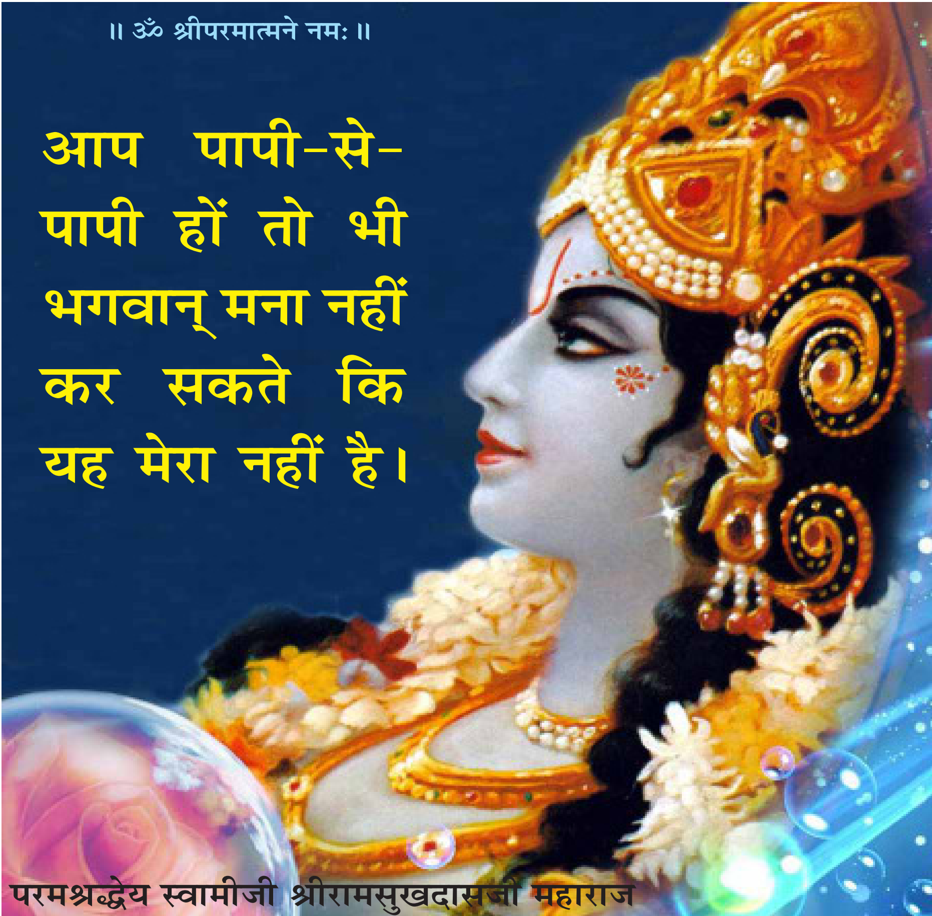
|| ॐ श्रीपरमात्मने नमः ||

ज्ञानकी बातें सीख जाओगे तो वाचिक ज्ञानी, बद्धज्ञानी बन जाओगे। अज्ञानीकी मुक्ति हो सकती है, पर बद्धज्ञानीकी मुक्ति नहीं हो सकती।

—परमश्रद्धेय स्वामीजी श्रीरामसुखदासजी महाराज

'सीमाके भीतर असीम प्रकाश' पुस्तकसे





॥ ॐ श्रीपरमात्मने नमः ॥
आप पापी-से-
पापी हों तो भी
भगवान् मना नहीं
कर सकते कि
यह मेरा नहीं है।
परमश्रद्धेय स्वामीजी श्रीरामसुखदासजी महाराज

॥ ॐ श्रीपरमात्मने नमः ॥

संसारका सम्बन्ध पतन करनेवाला और भगवान्‌का सम्बन्ध उद्धार करनेवाला है—यह छोटी-सी बात है, पर बहुत दामी है! संसार पतन करनेवाला नहीं है, प्रत्युत उसका सम्बन्ध पतन करनेवाला है।

—परमश्रद्धेय स्वामीजी श्रीरामसुखदासजी महाराज

॥ ॐ श्रीपरमात्मने नमः ॥

आपसे कोई पूछे, कभी पूछे कि कहाँके हो ? कौन हो ? तो स्वतः मनमें आना चाहिये कि मैं भगवान्‌का हूँ। यह बात हरेकके सामने नहीं कहनी है, पर मनमें यही बात पैदा होनी चाहिये कि मैं भगवान्‌का हूँ।

—परमश्रद्धेय स्वामीजी श्रीरामसुखदासजी महाराज

॥ ॐ श्रीपरमात्मने नमः ॥

घरवालोंकी सेवा करना एक नम्बर है, बाहरकी सेवा करना दो नम्बर है। जिन्होंने शरीर दिया है, शिक्षा दी है, खर्चा किया है, उनको न मानकर बाहर जाकर सेवा करते हैं—यह बिलकुल अन्याय है! घरमें माँ-बाप बीमार हैं और चले हैं दुनियाकी सेवा करने! जिन माँ-बापसे मनुष्यजन्म पाया है, उनकी तो सेवा करते नहीं, पर दुनियाकी सेवा करते हो—यह पाप है पाप! इसलिये पहले घरवालोंकी सेवा करके कर्जा उतारो, पीछे उपकार करो।..... वे अपनेको स्वयंसेवक कहते हैं तो वास्तवमें वे दूसरोंके सेवक नहीं हैं, प्रत्युत स्वयंसेवक अर्थात् अपने ही सेवक हैं; क्योंकि बाहर जाकर सेवा करनेसे वाह-वाह (महिमा) होती है, घरमें वाह-वाह नहीं होती! वास्तवमें उनका सेवा करनेका शौक नहीं है, प्रत्युत अपनी महिमा करवानेका शौक है।

—परमश्रद्धेय स्वामीजी श्रीरामसुखदासजी महाराज

॥ ॐ श्रीपरमात्मने नमः ॥

आपका शरीर माँ-बापका बेटा है, पर आप स्वयं भगवान्‌के बेटे हो। हम भगवान्‌के हैं—यह बात आप मान लें तो आपका सत्संग सफल हो गया! जैसे धनी आदमीके बेटेके भीतर एक गरमी रहती है, राजाके बेटेके भीतर एक गरमी रहती है, ऐसे ही आपके भीतर यह गरमी रहनी चाहिये कि मैं भगवान्‌का बेटा हूँ!



—परमश्रद्धेय स्वामीजी श्रीरामसुखदासजी महाराज

॥ ॐ श्रीपरमात्मने नमः ॥

जैसे अपनी शक्तिसे हम भगवान्‌को जान नहीं सकते, ऐसे ही सन्तोंको भी जान नहीं सकते। उनके पासमें रहते हुए भी नहीं जान सकते! उनको जाननेमें अपनी बुद्धिमानी काम नहीं करती, प्रत्युत उनकी कृपा काम करती है—*‘सोइ जानइ जेहि देहु जनाई’* (मानस, अयोध्या० १२७। २)। भगवान् और उनके भक्तोंके चरित्रको उनकी कृपाके बिना समझ नहीं सकते। इसलिये भगवान्‌को और उनके भक्तोंको पहचाननेवाले कम होते हैं।

*** *** ***

जबतक सन्त जीवित रहते हैं, तबतक उनके गुण प्रकट नहीं होते, लोग उनके गुणोंको जानते नहीं और उनसे लाभ नहीं लेते। परन्तु उनका शरीर शान्त होनेके बाद लोगोंको चेत होता है और वे उनके गुणोंको याद करके रोते हैं।

—परमश्रद्धेय स्वामीजी श्रीरामसुखदासजी महाराज

॥ ॐ श्रीपरमात्मने नमः ॥

श्रोता—

अमुक काम अच्छा है या मन्दा है—इसका निर्णय किस आधार पर करें ?

स्वामीजी—

जिसमें अपना स्वार्थ है, वह मन्दा है और जिसमें दूसरोंका हित है, वह बढ़िया है। सीधी बात है, लिख लो!

—परमश्रद्धेय स्वामीजी श्रीरामसुखदासजी महाराज

॥ ॐ श्रीपरमात्मने नमः ॥

श्रोता— महाराजजी, सत्संग की सब बातें समझमें आती हैं, लगन भी है, फिर भी काम क्यों नहीं बनता है ?

स्वामीजी— मनमें रुपयोंकी और भोगोंकी इच्छा है। उनसे जो सुख मिलता है, उसका त्याग नहीं करते। इसलिये पारमार्थिक बातें काम नहीं देतीं।

—परमश्रद्धेय स्वामीजी श्रीरामसुखदासजी महाराज

॥ ॐ श्रीपरमात्मने नमः ॥

श्रोता— गृहस्थमें रहकर साधककी दिनचर्या क्या होनी चाहिये?

स्वामीजी— मनसे हरदम भगवान्‌को याद रखना। भगवान्‌से एक-एक, दो-दो, तीन-तीन मिनटमें कहते रहो कि 'हे नाथ! मैं आपको भूलूँ नहीं'।

—परमश्रद्धेय स्वामीजी श्रीरामसुखदासजी महाराज

॥ ॐ श्रीपरमात्मने नमः ॥

श्रोता—

कौन-सा भजन बढ़िया होता है?

स्वामीजी—

भजन वही बढ़िया होता है, जिसमें भगवान्‌ का प्रेम बढ़े और संसार से वैराग्य हो।

—परमश्रद्धेय स्वामीजी श्रीरामसुखदासजी महाराज

श्रोता—

खास भूल क्या है ?

स्वामीजी—

खास भूल यही है कि संसार अपना नहीं है, उसको तो अपना मान लिया और भगवान् अपने हैं, उनको अपना नहीं माना। जो हमारे नजदीक-से-नजदीक हैं, उन भगवान्‌को तो छोड़ दिया और जो दूर-से-दूर है, उस संसारको पकड़ लिया—यह खास भूल है।

—परमश्रद्धेय स्वामीजी श्रीरामसुखदासजी महाराज

॥ ॐ श्रीपरमात्मने नमः ॥

जहाँ भगवान्‌की विशेषता दीखती है, वहाँ अपनी विशेषता नहीं दीखती। जहाँ अपनी विशेषता दीखती है, वहाँ भगवान्‌की विशेषता नहीं दीखती।



मनुष्य भगवान्‌के सम्बन्धसे बड़ा होता है। हमारेमें जिस विशेषताको देखकर लोग हमारा आदर करते हैं, वह विशेषता भगवान्‌की है, हमारी नहीं है।

—परमश्रद्धेय स्वामीजी श्रीरामसुखदासजी महाराज

यदि मनुष्य अपने कर्तव्यका पालन नहीं करता तो देवताओंमें ही नहीं प्रत्युत त्रिलोकीभरमें हलचल उत्पन्न हो जाती है और परिणामस्वरूप अतिवृष्टि, अनावृष्टि, भूकम्प, दुर्भिक्ष आदि प्राकृतिक प्रकोप होने लगते हैं। जिस तरह गतिशील बैलगाड़ीका कोई एक पहिया भी खण्डित हो जाय तो उससे पूरी बैलगाड़ीको झटका लगता है, इसी तरह गतिशील सृष्टि-चक्रमें यदि एक व्यक्ति भी कर्तव्यच्युत होता है तो उसका विपरीत प्रभाव सम्पूर्ण सृष्टिपर पड़ता है। इसके विपरीत जैसे शरीरका एक भी पीड़ित (रोगी) अंग ठीक होनेपर सम्पूर्ण शरीरका स्वतः हित होता है, ऐसे ही अपने कर्तव्यका ठीक-ठीक पालन करनेवाले मनुष्यके द्वारा सम्पूर्ण सृष्टिका स्वतः हित होता है।

॥ ॐ श्रीपरमात्मने नमः ॥

धर्मके अनुसार खुद चलें—इसके समान धर्मका प्रचार कोई नहीं है।

—परमश्रद्धेय स्वामीजी श्रीरामसुखदासजी महाराज

॥ ॐ श्रीपरमात्मने नमः ॥

मैं सेवा करता हूँ अथवा मैं त्याग करता हूँ—ऐसा अभिमान करना भूल है। जब संसारमें मेरी कोई वस्तु है ही नहीं तो त्याग क्या हुआ ? और जिसकी वस्तु थी, वह उसको दे दी तो सेवा क्या हुई ?

—परमश्रद्धेय स्वामीजी श्रीरामसुखदासजी महाराज

॥ ॐ श्रीपरमात्मने नमः ॥

वास्तवमें कल्याण न गुरुसे होता है और न ईश्वरसे ही होता है, प्रत्युत हमारी सच्ची लगनसे होता है। खुदकी लगनके बिना भगवान् भी कल्याण नहीं कर सकते। अगर कर देते तो हम आजतक कल्याणसे वंचित क्यों रहते?

—परमश्रद्धेय स्वामीजी श्रीरामसुखदासजी महाराज

॥ ॐ श्रीपरमात्मने नमः ॥

शरीरके साथ सम्बन्ध रखते हुए कोई कितनी ही तपस्या कर ले, समाधि लगा ले, लोक-लोकान्तरोंमें घूम आये अथवा यज्ञ, दान आदि बड़े-बड़े पुण्यकर्म कर ले, तो भी उसका बन्धन सर्वथा नहीं मिट सकता। शरीरके सम्बन्धका त्याग होते ही बन्धन मिट जाता है और सत्य तत्त्वकी अनुभूति हो जाती है।

—परमश्रद्धेय स्वामीजी श्रीरामसुखदासजी महाराज

॥ ॐ श्रीपरमात्मने नमः ॥

श्रोता—

घर का काम करते समय भगवान् को भूल जाते हैं, क्या करें ?

स्वामीजी—

यह निश्चय कर लो कि आज से अपने घरका काम करना ही नहीं है, प्रत्युत केवल भगवान् के घर का काम करना है।

—परमश्रद्धेय स्वामीजी श्रीरामसुखदासजी महाराज

॥ ॐ श्रीपरमात्मने नमः ॥

मनुष्यकी आफत, दुःख मिटाने के लिये भगवान् के मन में एक भूख है, लालसा है कि यह मुझे अपना कहे! सच्चे हृदय से कह दे कि 'हे नाथ! मैं आपका हूँ' तो भगवान् खुश हो जाते हैं!

—परमश्रद्धेय स्वामीजी श्रीरामसुखदासजी महाराज

॥ ॐ श्रीपरमात्मने नमः ॥

विचार करें, जब चौरासी लाख योनियों में कोई भी शरीर हमारे साथ नहीं रहा तो फिर यह शरीर हमारे साथ कैसे रहेगा? जब चौरासी लाख शरीर मैं-मेरे नहीं रहे तो फिर यह शरीर मैं-मेरा कैसे रहेगा?



—परमश्रद्धेय स्वामीजी श्रीरामसुखदासजी महाराज

॥ ॐ श्रीपरमात्मने नमः ॥

अनेक शास्त्रोंका अध्ययन करनेसे, बहुत व्याख्यान सुननेसे, बहुत-सी बातें जान लेनेसे ही जीवनमें दुःख, अशान्ति, अभाव, पराधीनता आदिका नाश नहीं हो सकता। उससे मनुष्यकी बुद्धि बलवती बन सकती है, पर सम (स्थिर) नहीं हो सकती।



—परमश्रद्धेय स्वामीजी श्रीरामसुखदासजी महाराज

॥ ॐ श्रीपरमात्मने नमः ॥

निष्काम होनेपर साधक संसारपर विजय प्राप्त कर लेता है। कारण कि कामनावाले मनुष्यको कइयोंके अधीन होना पड़ता है, पर जिसको कुछ नहीं चाहिये, उसको किसीके अधीन नहीं होना पड़ता। उसका मूल्य संसारसे अधिक हो जाता है।

—परमश्रद्धेय स्वामीजी श्रीरामसुखदासजी महाराज

॥ ॐ श्रीपरमात्मने नमः ॥

जब बड़ा समुद्री जहाज डूबता है, तब छोटी–छोटी नावों में माल पार कर देते हैं। ऐसे ही धन का संग्रह छोटी–छोटी नावों में दीन–दुखियों के यहाँ पहुँचा दो तो वह फिर आगे मिल जायगा, नहीं तो सब–का–सब डूब जायगा!



—परमश्रद्धेय स्वामीजी श्रीरामसुखदासजी महाराज

॥ ॐ श्रीपरमात्मने नमः ॥

जो सांसारिक पदार्थोंके लिये दुःखी होता है, वह कितना ही रोये, रोते-रोते मर जाय, पर भगवान् उसकी बात सुनते ही नहीं। कारण कि वह वास्तवमें दुःखके लिये ही रो रहा है! परन्तु जो संसारका त्याग करनेके लिये रोता है, भगवान्‌को पानेके लिये रोता है, उसका दुःख भगवान् सह नहीं सकते।

—परमश्रद्धेय स्वामीजी श्रीरामसुखदासजी महाराज

॥ ॐ श्रीपरमात्मने नमः ॥

एक सीधी सरल बात—भगवान् मेरे हैं। ऐसे भगवान्‌को मेरा कह दिया तो बड़ा असर पड़ता है प्रभुपर। अनेक जन्मोंसे बिछुड़ा हुआ और चौरासी लाख योनियाँ भुगतता हुआ, दुःख पाता हुआ जीव अगर कह दे—'हे नाथ! मैं आपका हूँ। हे प्रभु! आप मेरे हो' तो प्रभुको बड़ा संतोष होगा। बड़े ही राजी होंगे भगवान्। मानो भगवान्‌की खोयी हुई चीज भगवान्‌को मिल गयी।

—परमश्रद्धेय स्वामीजी श्रीरामसुखदासजी महाराज

॥ ॐ श्रीपरमात्मने नमः ॥

मकान यहाँ बना रहे हो, सजावट यहाँ कर रहे हो, पर खुद भागे जा रहे हो मृत्युकी तरफ! मरनेपर जहाँ जाना है, उसको ठीक करो।

—परमश्रद्धेय स्वामीजी श्रीरामसुखदासजी महाराज

॥ ॐ श्रीपरमात्मने नमः ॥

संसारमें रबड़की गेंदकी तरह रहो, मिट्टीका लौंदा मत बनो। जो चिपकता है, वही फँसता है। गेंद किसीसे नहीं चिपकती। सेवा सबकी करो, पर कहीं चिपको मत।

—परमश्रद्धेय स्वामीजी श्रीरामसुखदासजी महाराज

॥ ॐ श्रीपरमात्मने नमः ॥

वस्तुसे, व्यक्तिसे, परिस्थितिसे, घटनासे, अवस्थासे जो सुख चाहता है, आराम चाहता है, लाभ चाहता है, उसको पराधीन होना ही पड़ेगा, बच नहीं सकता, चाहे ब्रह्मा हो, इन्द्र हो, कोई भी हो। मैं तो यहाँतक कहता हूँ कि भगवान् भी बच नहीं सकते। जो दूसरेसे कुछ भी चाहता है, वह पराधीन होगा ही।

—परमश्रद्धेय स्वामीजी श्रीरामसुखदासजी महाराज

॥ ॐ श्रीपरमात्मने नमः ॥

किसीको अपना माननेके लिये उसे देखनेकी जरूरत नहीं है, प्रत्युत अपना स्वीकार करनेकी जरूरत है। हम प्रतिदिन अनेक मनुष्योंको देखते हैं तो क्या उन सबसे अपनेपनका सम्बन्ध हो जाता है? उन सबसे मित्रता हो जाती है? प्रेम हो जाता है? जिसको अपना स्वीकार करते हैं, उसीसे प्रेम होता है।

—परमश्रद्धेय स्वामीजी श्रीरामसुखदासजी महाराज



॥ ॐ श्रीपरमात्मने नमः ॥

अभी गायोंपर संकट आया हुआ है। आप गायोंकी रक्षा, उनका पालन कर सकें तो आपका धन, बल, जीवन, आयु सब सफल हो जायगा।

इनको सफल करनेका अभी बहुत बढ़िया मौका है। गायोंकी रक्षा करनेके समान कोई पुण्य नहीं है। कठिनता सहकर जो पुण्य कार्य किया जाता है, उसका अधिक माहात्म्य होता है।

—परमश्रद्धेय स्वामीजी श्रीरामसुखदासजी महाराज

'गोरक्षा—हमारा परम कर्तव्य' पुस्तकसे

॥ ॐ श्रीपरमात्मने नमः ॥



हमारे धर्मप्रधान देशमें रुपयोंके लोभसे बड़ी संख्यामें गोवध किया जा रहा है। गीतामें लोभको नरकका द्वार बताया गया है। गोवधसे पैदा हुआ रुपया महान् हानिकारक एवं बुद्धि भ्रष्ट करनेवाला है। जिसमें असंख्य प्राणियोंकी आह भरी हुई है, उस रुपयेसे बड़ा भारी अनर्थ होगा। उन रुपयोंसे कभी शान्ति नहीं हो सकती।

—परमश्रद्धेय स्वामीजी श्रीरामसुखदासजी महाराज

'गोरक्षा—हमारा परम कर्तव्य' पुस्तकसे

॥ ॐ श्रीपरमात्मने नमः ॥

इस जीवने घर, परिवार, जमीन, धन आदि जिन चीजोंमें ममता कर ली है, अपनापन कर लिया है, उस ममता (अपनापन)-के कारण इस जीवको मरनेके बाद फिर लौटकर आना पड़ता है।

—परमश्रद्धेय स्वामीजी श्रीरामसुखदासजी महाराज

॥ ॐ श्रीपरमात्मने नमः ॥

संसारकी जिस चीजको आप बड़ी मानते हैं, उसका बड़प्पन यही है कि आपको परमात्मप्राप्ति नहीं होने देगी और खुद रहेगी नहीं।

—परमश्रद्धेय स्वामीजी श्रीरामसुखदासजी महाराज



॥ ॐ श्रीपरमात्मने नमः ॥

यदि सत्संग करते हुए मनकी शंकाएँ न मिटें, भगवान्‌में प्रेम न हो, भजन न बढ़े तो वह सत्संग भी भोग है।

असत्‌से असंग होनेपर सत्संग होता है। यदि असत्‌से असंग नहीं हुए तो कोरी बातें सीखी हैं।

—परमश्रद्धेय स्वामीजी श्रीरामसुखदासजी महाराज

॥ ॐ श्रीपरमात्मने नमः ॥

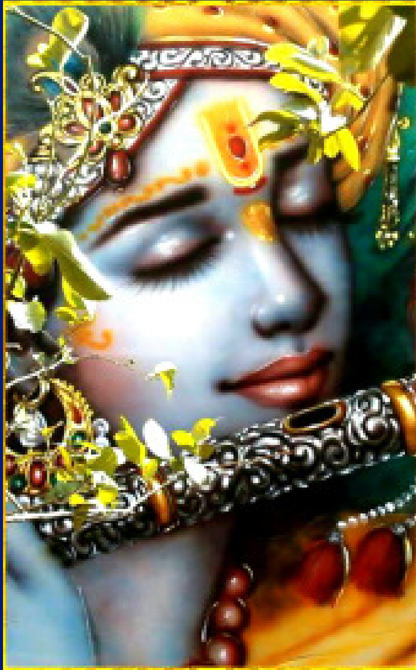
इस मृत्यु-संसार-सागरके सभी आश्रय मगरमच्छके आश्रयकी तरह ही हैं।



अतः मनुष्यको विनाशी संसारका आश्रय न लेकर अविनाशी परमात्मतत्त्वका ही आश्रय लेना चाहिये।

—परमश्रद्धेय स्वामीजी श्रीरामसुखदासजी महाराज

॥ ॐ श्रीपरमात्मने नमः ॥



परमात्माका रचा हुआ संसार भी जब इतना प्रिय लगता है, तब (संसारके रचयिता) परमात्मा कितने प्रिय लगने चाहिये! यद्यपि रची हुई वस्तुमें आकर्षण होना एक प्रकारसे रचयिताका ही आकर्षण है, तथापि मनुष्य अज्ञानवश उस आकर्षणमें परमात्माको कारण न मानकर संसारको ही कारण मान लेता है और उसीमें फँस जाता है।

—परमश्रद्धेय स्वामीजी श्रीरामसुखदासजी महाराज

॥ ॐ श्रीपरमात्मने नमः ॥

शरीर-संसारपर विश्वास करना महान् घातक है। शरीर-संसारपर विश्वास करके ही जीव जन्म-मरणरूप बन्धनमें पड़ा है, अन्य कोई कारण नहीं है। इसी तरह भगवान्‌पर विवेक-विचार करना भी महान् घातक है; क्योंकि ऐसा करनेसे मनुष्य भगवान्‌को बुद्धिका विषय बना लेगा और कोरी बातें सीख जायगा, हाथ कुछ लगेगा नहीं! सीखा हुआ ज्ञान अभिमान पैदा करता है और भगवान्‌से विमुख करता है, जो मनुष्यके पतनका हेतु है।

—परमश्रद्धेय स्वामीजी श्रीरामसुखदासजी महाराज

॥ ॐ श्रीपरमात्मने नमः ॥

संसार हमें वह वस्तु दे ही नहीं सकता, जो हम वास्तवमें चाहते हैं। हम सुख चाहते हैं, अमरता चाहते हैं, निश्चिन्तता चाहते हैं, निर्भयता चाहते हैं, स्वाधीनता चाहते हैं। परन्तु यह सब हमें संसारसे नहीं मिलेगा, प्रत्युत संसारके सम्बन्ध-विच्छेदसे मिलेगा।

—परमश्रद्धेय स्वामीजी श्रीरामसुखदासजी महाराज

॥ ॐ श्रीपरमात्मने नमः ॥

जैसे विवाहिता स्त्रीको पीहरकी याद आ जाय तो वह पीहरकी (कुँआरी) नहीं हो जाती, ऐसे ही हम भगवान्‌के हो गये तो अब भले ही संसारकी याद आ जाय, याद आनेसे हम संसारके थोड़े ही हो जायँगे!

परमश्रद्धेय स्वामीजी श्रीरामसुखदासजी महाराज

॥ ॐ श्रीपरमात्मने नमः ॥

जिस वस्तुका दुरुपयोग करोगे, वह वस्तु पुनः नहीं मिलेगी—यह नियम है। यदि मनुष्यशरीरका दुरुपयोग करोगे तो यह दुबारा नहीं मिलेगा।

—परमश्रद्धेय स्वामीजी श्रीरामसुखदासजी महाराज

॥ ॐ श्रीपरमात्मने नमः ॥



जैसे हवाई जहाज चलता है तो उसमें कोई मनुष्य (चालक) दीखता नहीं, पर उसमें मनुष्य जरूर होता है, नहीं तो उसको चलाता कौन है ? ऐसे ही परमात्मा सबमें हैं, नहीं तो सबको चलाता कौन है ?

—परमश्रद्धेय स्वामीजी श्रीरामसुखदासजी महाराज

॥ ॐ श्रीपरमात्मने नमः ॥

पहले मनमें भाव उठता है, पीछे मनुष्य उसे अपनी भाषामें व्यक्त करता है। भगवान् तो मनमें उठनेवाले भावको ही जान लेते हैं, भाषा तो पीछे रही! जहाँ भाव उठता है, वहीं भगवान् मौजूद हैं।



—परमश्रद्धेय स्वामीजी श्रीरामसुखदासजी महाराज

॥ ॐ श्रीपरमात्मने नमः ॥

आपलोगोंसे प्रार्थना है कि आप कोई भी काम करो तो भगवान्‌को याद करके करो। कुछ भी लिखो तो पहले ऊपर भगवान्‌का नाम लिखो। जिस पत्रके ऊपर भगवान्‌का नाम नहीं लिखा हो, वह मुझे बिना सिरवाले पिशाचकी तरह दीखता है! ऊपर भगवान्‌का नाम नहीं है तो मानो सिर नहीं है!

—परमश्रद्धेय स्वामीजी श्रीरामसुखदासजी महाराज

॥ ॐ श्रीपरमात्मने नमः ॥

भगवान्‌से एक ही चीज माँगो कि 'हे नाथ! मैं आपको भूलूँ नहीं'। यह एक मन्त्र है, जिससे भगवान्‌की स्मृति होगी। स्मृति होनेसे आपमें शान्ति, आनन्द, दया, क्षमा, उदारता आदिका ठिकाना नहीं रहेगा। सम्पूर्ण दुःखोंका अत्यन्त अभाव हो जायगा। केवल उनको हर समय याद रखो।

—परमश्रद्धेय स्वामीजी श्रीरामसुखदासजी महाराज



॥ ॐ श्रीपरमात्मने नमः ॥

वर्षोंतक सत्संग करनेसे जो लाभ नहीं होता, वह भगवान्‌को अपना मान लेनेसे एक दिनमें हो जाता है!

—परमश्रद्धेय स्वामीजी श्रीरामसुखदासजी महाराज

